DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-5,
THEORIES OR FACTORS OF OBESSIVE-COMPULSIVE DISORDER
LECTURE-47

मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति के सिद्धांत या कारक

THEORIES OR FACTORS OF OBESSIVE –COMPULSIVE DISORDER OCD

OCD के कारणों की व्याख्या करने के लिए कई सिद्धांतों का वर्णन किया गया है जो निम्नांकित है –

(1) **जैविक सिद्धांत या कारक (BIOLOGICAL THEORIES OR FACTOR)**
(2) **मनोविश्लेषक सिद्धांत या कारक (PSYCHOANALYTIC THEORIES OR FACTOR)**
(3) **व्यवहारात्मक सिद्धांत या कारक (BEHAVIORAL THEORIES OR FACTOR)**

(4) संज्ञानात्मक सिद्धांत या कारक (COGNITIVE THEORIES OR FACTOR)

इन सबो का वर्णन निम्नांकित है –

(1) जैविक सिद्धांत या कारक – अब तक किये गए शोधो से यह स्पष्ट रुझान मिला है की **OCD** की उत्पत्ति में कुछ जैविक कारको की निर्णायक भूमिका होती है |मैककिओन एवं मर्रे (MCKEON & MURRAY,1987) ने अपने अध्ययन में पाया है की **OCD** के रोगियों के संबंधियों में चिंता विकृति अधिक होती है तथा लिओन एवं उनके सहयोगियों (1990) ने अपने अध्ययन में पाया की करीब 30% संबंधियों में **OCD** का रोग था |जेनीक(1986) के अध्ययन के अनुसार **OCD** उत्पन्न होने में इनसेफालिटीस,सिर में चोट तथा मस्तिष्कीय ट्यूमर की भी अहमियत पायी गयी है | जैव मेडिकल शोधकर्त्ताओ ने अपने शोधो के आधार पर यह दावा प्रस्तुत किया है की **OCD** एक मस्तिष्कीय रोग है और इसके समर्थन में निम्नांकित तीन तरह के सबूतों की चर्चा की गयी है –

(I) **तंत्रकीय चिन्ह (NEUROLOGICAL SIGNS)**-कुछ ऐसे सबूत मिले है जिनमे यह देखा गया है की **OCD**

मस्तिष्कीय आघात से विकसित होता है | ऐसे रोगियों के तंत्रकीय परिक्षण के बाद कई तरह की असामान्यता जैसे घटिया पेशीय समन्वय ,अनैच्छिक झटका तथा घटिया दृष्टि –पेशीय निष्पादन होने का सबूत मिला है|

कुछ ऐसे भी सबूत मिले है जिनसे यह पता चला है कि **OCD** का संबंध मिरगी रोग से भी है |

(2) **मस्तिष्कीय स्कैन असामान्यता (BRAIN SCAN ABNORMALITIES)**-मस्तिष्कीय स्कैन अध्ययनों से यह पता चला है की **OCD** के रोगियों के मस्तिष्क के कई भाग ऐसे होते है जिनमें अतिक्रियाशिलता पायी जाती है | जैसे, कॉर्टिकल –स्ट्रीएटल थैलेमिक क्षेत्र की सक्रियता के रोगियों में अधिक पाया जाता है |मस्तिष्क के इस क्षेत्र का संबंध असंगत सूचनाओ एवं व्यवहार की अनावश्यक पुनरावृत्ति को कम करना है |

(3) **औषध चिकित्सा से मिले सबूत (EVIDENCES FROM DRUG THERAPY)**-इस क्षेत्र के विशेषज्ञों विशेषकर मनश्चिकित्सको का मत की जब कोई रोग विशेष औषध से कम होता या लगभग समाप्त हो जाता है ,तो इससे अपने आप यह निष्कर्ष निकलता है की रोग का कुछ

जैविक आधार है |जैसे **,OCD** की चिकित्सा में एक विशेष औषध जिसे क्लोमिप्रेमाइन कहा जाता है ,काफी उत्तम सिद्ध हुआ है क्योंकि इससे **OCD** के लक्षण काफी कम हो जाते है |क्लोमिप्रेमाइन एक तरह का विसाद – विरोधी दावा है |

स्पष्ट हुआ है की **OCD** की उत्पत्ति में कई तरह के जैविक कारको की अहमियत है |

(2) **मनोविश्लेषनात्मक सिद्धांत** –इस सिद्धांत के अनुसार जब अवांछनीय एवं अचेतन के चिन्तनो जो दमित हो कर व्यक्ति के अचेतन में होते है ,चेतन में आने की कोशिश करता है ,तो इससे व्यक्ति एक सुरक्षात्मक उपयोग को ढूंढता है और इस सुरक्षात्मक उपाय के रूप में वह **OCD** के लक्षणों को विकसित कर लेता है |इस सुरक्षात्मक प्रक्रिया के रूप में वह मूलतः प्रति स्थापन तथा विस्थापन का उपयोग करता है |जैसे –एक लड़की का अचेतन खौफनाक चिंतन यह था की “उसकी माँ तीव्र भुखार से मर जा सकती है |”इस तरह का चिंतन जब-जब चेतन में आता था वह चिंतित हो जाती थी और उस चिंता से बचने के लिए उसने अपने उस खौफनाक चिंतन का प्रतिस्थापन कुछ कम अवांछनीय वस्तु जैसे रंग एवं

गर्म वस्तुओ के चिंतन से हो गया |अब वह कुछ ख़ास तरह के रंग जो बार-बार देखना पसंद करती थी ,गर्म पानी से बार-बार स्नान करना,हाथ धोना उसे अच्छा लगता था ,आदि-आदि |

(3) **व्यवहारात्मक सिद्धांत** –इस सिद्धांत के अनुसार **OCD** को एक सिखा गया विकृति माना गया है जो विशेष तरह के परिणामो से पुनर्बलित होता है |एक ऐसा परिणाम है –डर की कमी | इस व्याख्या का समर्थन मेयर एवं चेसर (1970) तथा हजसन एवं रैकमैन (1972) द्वारा किया गया है |जैसे –बाधित हाथ साफ़ करने का व्यवहार को एक क्रिया प्रसुत पलायन अनुक्रिया माना गया है जो गंदगी या जीवाणु से दूषित हो जाने की मनोग्रस्ति चिंतन को कम करता है |शेक्सपियर के मशहूर नाटक 'मैकबेथ' में लेडी मैकबैथ जब किंग डनकन को मारने में सफल हो जाती है ,तो उसमे बार-बार हाथ धोने की बाधित व्यवहार विकसित हो जाता है क्योकि इसमें यह मनोग्रस्ति चिंतन विकसित हो गया था की उसका हाथ इस कार्य में किसी-न-किसी तरह के जीवाणु से दूषित हो गया है |

(5) **संज्ञानात्मक सिद्धांत** – संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार जब व्यक्ति किसी ऐसी परिस्थिति में होता है जिसमे कुछ अवांछनीय या खतरनाक परिणाम उत्पन्न होने की थोड़ी संभावना होती है और जब व्यक्ति इस तरह के परिणाम का अति आकलन करता है ,तो उसमे **OCD** के लक्षण उत्पन्न होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है | इस विचार धारा के समर्थक कार्र (1974) है और उनके अनुसार इस तरह का संज्ञानात्मक सेट अर्थात अतिआकलन का संज्ञानात्मक सेट व्यक्ति को उस तरह की परिस्थिति से दूर हटने की प्रवृति उत्पन्न करता है और इस तरह से उसमे **OCD** के उत्पन्न होने की संभावना तीव्र हो जाती है|

स्पष्ट हुआ की **OCD** के कारणों की व्याख्या कई तरह के सिद्धांतो द्वारा की गयी है |इसके कारण को ठीक ढंग से समझने के लिए इन सभी तरह के सिद्धांतो को समझना आवश्यक है |